विचार बिन्दु

कोयल दिव्य आम रस पीकर भी अभिमान नहीं करती, लेकिन मेंढक कीचड़ का पानी पीकर भी टर्राने लगता है। –प्रसंग रत्नावली

बाजार और साहित्य – नए प्रयोग पुराने आलाप

आज कल साहित्य की दुनिया ने भी ओटीटी जैसे प्लेटफार्म पर अपना अड्डा बना लिया है। इस प्लेटफार्म का नारा है 'खुल' कर लिखो और जम कर बिको। यहां का खुलना ओटीटी की नायिकाओं के अति खुलेपन को टक्कर देता दिखाई देगा। दरअसल आज साहित्य की दुनिया में दो तरह के लेखक, कवि हैं एक वे जो परम्परावाद की पूंछ पर लटके हैं। वे लिखें जा रहे हैं बेस्वाद बेमतलब। कोई उनसे पूछे भाई जी, मैडम साहिबा क्यों लिख रहे हैं जब कोई आपको घास ही नहीं डाल रहा, कोई आपको बांच भी नही रहा तो वे यकायक दार्शनिक मुद्रा ओढ़ कर कहेंगे स्वान्तःसुखाया रघुनाथ गाथा कीजिए। फिर वे घुमाफिरा कर युवा लेखकों, मीडिया हाउसों और अकादमियों पर अपनी भड़ास निकालते दिखेंगे। दूसरे वे लेखक हैं जो बाजार की नब्ज पकड़ कर रखते हैं और उसकी धुनो पर अपनी लेखनी को बैली डांस कराते हैं। वे अपने लेखन को जब एक मुक्कमल मुकाम तक ले जाते हैं तब बाकायदा एक मार्केटिंग टीम और मीडिया मैनजरों के जरिए अपने लेखन की पंहुच बढ़ाते हैं। यह सब सुनियोजित होता है यहां आधुनिकतम तकनीकों के उपयोग की टीम लगी होती है, वे अपने फालोवर्स को करोड़ों तक पंहुचा रहे हैं। यहीं से वे सक्षम सामर्थ्य हासिल कर बाजार का दोहन करना सीख जाते हैं। यहां नैतिकता, सामाजिक मूल्य, धर्म और विज्ञान उतना ही दिखेगा जितना पैकेज की बिक्री के लिए जरूरी है । पुराने लेखक अपने लेखन से पैसे कमाने की सोच भी नही सकते । हां वे रात–दिन पुरस्कारों, सम्मानों और सदरतों का रोना रोते जरूर दिख जाएंगे। वे हर पुरस्कार और सम्मान की घोषणा के साथ रुदालि शुरू करते हैं और उनका विलाप सरकारी अकादमियों के पुरस्कारों की घोषणा के साथ करुण क्रुन्दन में तब्दील हो जाता है और अन्त में एक दूसरे की बांहों की आस्तीनों से अपने आंसू पौंछ लेते हैं। जो इन सब मायावी चीजों से परे होने का दिखावा करते हैं वे आत्म प्रवंचना से मुग्ध हो कर कोऊ नृप भये की तान पर मगन दिखेंगे। बहुत से पुराने लेखक आज भी ओल्ड इज गोल्ड की तरह चमकदार हैं लेकिन वे अंगुलियों पर गिनने योग्य ही हैं। वैसे आपको हर शहर में गिने–गिनाए छंटे–छंटाए वे ही सौ–पचास चेहरे हर साहित्यिक आयोजन की शोभा बढ़ाते दिखेंगे, अरे भाई और लोग कहां हैं उन्हें भी तो आगे लाओ । वैसे भी आज अधिकांश साहित्यकार अपने पैसों से छपाकर किताबें परोस रहे हैं तो उनका दर्द तो समझा ही जा सकता है। आज पूरे देश में ऐसे सौ साहित्यकार भी नही है जिनकी सालभर में दस हजार किताबों का एडिशन बिकता हों।

युवा लेखकों ने प्रिन्ट की लीक तोड़कर इन्टरनेट की दुनिया में अपना मुकाम बनाया है वे हिन्दी के लेखक भी हैं। ऐसे नायक नए तौर तरीकों से सज–धज कर बाजार में हाजिर हैं। वेबदुनिया में वे अपने लिए एक मुक्कमल फोलोवर्स लेकर बहुत आगे निकल चुके हैं। उनके अपने पाडकास्ट हैं, अपने फेसबुक पेज हैं और अपने ही समीक्षक और प्रसंशक हैं। कुल मिलाकर वे नित नया खोज परख और सनसनीखेज परोसते हैं तथा जमकर धन कूट रहे हैं। अपने पापुलर पाडकास्ट पर वे किसी टाइकून का इन्टरव्यू करने के पन्द्रह लाख रुपए ले रहे हैं। आपको पता है ऐसा क्यों है क्योंकि किसी भी उभरने की लालसा वाले व्यक्ति को व्यापक रीच चाहिए जो इन आधुनिक पाडकास्टों से ही सम्भव है। आपकी निगाह में हैं कोई ऐसा आकाधाका पुराना मंजा हुआ लेखक ?

> **युवा लेखकों ने प्रिन्ट की लीक तोड़कर इन्टरनेट की दुनिया में अपना मुकाम बनाया है वे हिन्दी के लेखक भी हैं। ऐसे नायक नए तौर तरीकों से सज-धज कर बाजार में हाजिर हैं। वेबदुनिया में वे अपने लिए एक मुक्कमल फोलोवर्स लेकर बहुत आगे निकल चुके हैं। उनके अपने पाडकास्ट हैं, अपने फेसबुक पेज हैं और अपने ही समीक्षक और प्रसंशक हैं। कुल मिलाकर वे नित नया खोज परख और सनसनीखेज परोसते हैं तथा जमकर धन कूट रहे हैं।**

अब चलिए साहित्य की मल्टीप्लेक्स, मल्टीमीडिया के सम्मिश्रण से बनी चटपटी हाट रेसीपी वाले बाजार में। यहां हिंदी की बिंदी केवल साज सज्जा बतौर मिलती है। हर बड़े शहर में अब ये साहित्य की सजावटी मण्डियां खूब फल–फूल रही हैं। इनकी तर्ज पर छोटे शहरों कस्बों में भी साहित्य के जमावड़े होने लगे हैं। इन छोटे मेलों ख़ेल्लों को कुछ मशहूर होने के ख्वाहिशमंद अपने पुरखों को वैतरणी पार कराने के नाम पर अपने संसाधन लगा कर दो–चार साल मजमा जुटाते हैं फिर वे भी राम–राम कह देते हैं। वहीं कुछ झोलाछाप लेखक नारायण नारायण करते चंदा चिट्ठा इक्कट्ठा कर थोड़ा सा चंदन आने वाले मेहमानों को लगाकर शेष चांदनी रात में उड़ाते हैं। हां यहां भी चन्द गम्भीर और दिखावे से दूर लोग बड़े जतन से बेहतरीन काम कर रहे हैं उन्हें सौ–सौ सलाम।

बड़े शहरो के साहित्यिक मजमों का मौसम अक्टूबर से फरवरी के बीच होता है। फरफराते फर्राटेदार युवक–युवतियां आपको इन बड़े जलसों में फैशन परेड करते हुए लहराते मिलेंगे। यहां बाजार साहित्य को क्लासिक ढंग से परोसकर बेचता है। नामचीन लोगों को बुलाकर सनसनी फैलाने और विवादों को हवा देते वक्तव्यों की फसलें काटी जाती हैं। किताबों के बीच कला संस्कृति को सलीके से बेचा जाता है। यहां भी परम्परावादी लेखकों का रोना, ये कैसा उत्सव हम स्थापित स्थानीय लेखकों को छोड़कर बाहर वालों की बहार हमसे एंट्री के भी पैसे वसूल रहे हैं।

ऐसे चन्द नामचीन साहित्य महोत्सवों में शामिल हैं– शब्दों की घाटी, देहरादून, बैंगलोर साहित्य महोत्सव, एपीजे कोलकाता साहित्य महोत्सव और जयपुर साहित्य महोत्सव। हिन्दी साहित्य प्रेमियों को शायद इससे प्रेरणा मिले कि अंग्रेजी के मशहूर लेखक खुशवंत सिंह साहित्य महोत्सव, खुशवंत सिंह के नाम पर होता है । इस साहित्यिक उत्सव की शुरुआत 2012 में हुई थी और यह हर साल अक्टूबर में आयोजित होता है। इस उत्सव का आधार कसौली की खूबसूरत पहाड़ियों में है, जहाँ उनका अधिकांश काम हुआ था, और इसलिए यह उनकी विरासत के लिए एक उपयुक्त श्रद्धांजलि के रूप में कार्य करता है।

आजकल सरकारी साहित्य महोत्सवों की भी धूम शुरू है। ये आयोजन जैसी केन्द्र या राज्य सरकार वैसी उसकी तर्ज पर हो रहे हैं। वैसे वाद वैसे ही संवाद और फिर सार्वजनिक विवाद। आजकल का फार्मूला है फैलाओ विवाद और हासिल करो लोकप्रियता। तो साहेब साहित्य, राजनीति, अर्थतंत्र, मीडिया और फैशन के चौपालें पर खड़ा होकर विचरण कर रहा है होशियार लोग इसे गांठ रहे हैं, कुंठित मण्डली हांफ रही है ।

–अतिथि संपादक,
राजेन्द्र मोहन शर्मा,
अतिथि संपादक साहित्यकार, शिक्षाविद एवं चिन्तक

राशिफल शनिवार 18 जनवरी, 2025

पंडित अनिल शर्मा

माघ मास, कृष्ण पक्ष, पंचमी तिथि, शनिवार, विक्रम संवत 2081, पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र दिन 2:51 तक, शोभन योग रात्रि 1:16 तक, कौलव करण सायं 6:31 तक, चन्द्रमा रात्रि 9:28 से कन्या राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य–मकर, चन्द्रमा–सिंह, मंगल–कर्क, बुध–धनु, गुरू–वृष, शुक्र–कुम्भ, शनि–कुम्भ, राहु–मीन, केतु–कन्या राशि में।

आज विवाह मुर्हत उत्तरा फाल्गुनी है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ 8:40 से 9:54 तक, चर 12:37 से 1:56 तक, लाभ–अमृत 1:56 से 4:34 तक।

राहूकाल: 9:00 से 10:30 तक। सूर्योदय 7:21, सूर्यास्त 5:53

मेष
व्यावसायिक/आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। आज महत्वपूर्ण मामलों में दुविधा बनी रहेगी।

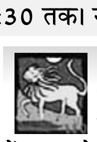

सिंह
मानसिक तनाव से राहत मिल सकती है। मनःस्थिति में सुधार होगा। आज आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव–प्रभुत्व बढ़ेगा।

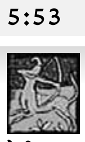

धनु
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। स्वास्थ्य में सुधार होगा।

वृष
घर–परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। परिवार में धार्मिक–सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कन्या
आर्थिक मामलों में परेशानी हो सकती है। धन हानि का भय बना रहेगा। अनावश्यक धन खर्च होगा। आज मन में असंतोष बना रहेगा।

मकर
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। आज यात्रा में परेशानी हो सकती है।

मिथुन
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। आज व्यावसायिक कार्यों के लिए बाहर जाना पड़ सकता है।

तुला
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

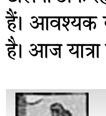

कुंभ
परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

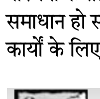

कर्क
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

वृश्चिक
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन हो सकता है।

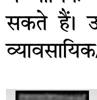

मीन
स्वास्थ्य में सुधार होगा। दिनचर्या में सुधार होगा। अनहोनी की आशंका से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है।

मादक पदार्थों का अवैध कारोबार देश के लिए चुनौती

बाल मुकुन्द ओझा

मादक पदार्थ विरोधी अभियान के तहत देश के विभिन्न शहरों में बड़ी मात्रा में ड्रग्स के जब्त किये जाने से एक ओर जहां नशे के सौदागरों को यह संदेश है कि उनके अवैध कारोबार को खत्म किया जाएगा, वहीं सरकार की इस प्रतिबद्धता का परिचायक भी कि वह अपने नशा उन्मूलन अभियान को लेकर दृढ़ है। पिछले कुछ वर्षों में तस्करी के जरिये लाए गए नशीले पदार्थों की बड़ी–बड़ी खेप बरामद की गई हैं और इन पदार्थों का कारोबार करने वालों की गिरफ्तारियां भी की गई हैं, लेकिन यह नहीं कहा जा सकता कि जो लोग भारत में नशीले पदार्थ भेज रहे हैं, उनके हौसले पूरी तौर पर पस्त हुए हैं। बड़ी मात्रा में नशीले पदार्थों की जब्ती से यह स्पष्ट होता है कि ऐसे उपाय करने की आवश्यकता है, जिससे भारत में नशीले पदार्थ आ ही न सकें। इसके लिए सीमाओं पर चौकसी बढ़ानी होगी और नशीले पदार्थों की तस्करी करने वालों पर शिकंजा भी कसना होगा। ऐसे तत्व देश के भीतर भी सक्रिय हैं और बाहर भी।

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के मुताबिक वर्ष 2024 में देशभर के पुलिस बलों और को 16,914 करोड़ रूपए मूल्य की ड्रग्स ज़ब्त करने में सफलता मिली है, जो आज़ादी के बाद का सबसे बड़ा आंकड़ा है। गृह मंत्री का बयान यह साबित करता है कि सरकार की लाख चेष्टा के बावजूद नशे का व्यापार देश में अनवरत चालू है। गृह मंत्री का कहना है, भारत ने पिछले 10 सालों में ड्रग्स के खिलाफ अपनी लड़ाई को काफी मजबूत किया है और इस दिशा में महत्वपूर्ण सफलता हासिल की है। उन्होंने बताया कि 2004 से 2014 के बीच लगभग 3 लाख 63 हजार किलो ड्रग्स जब्त किए गए थे, जबकि पिछले 10 वर्षों में यह आंकड़ा बढ़कर 24 लाख किलो तक पहुंच गया है, जो कि सात गुना अधिक है। ड्रग्स की कीमत की बात करें, तो 2004–2014 में जब्त किए गए ड्रग्स का मूल्य लगभग 8,150 करोड़ रुपये था, जो 2014–2024 में बढ़कर 56,851 करोड़ रुपये हो गया है, यानी यह आठ गुना बढ़ा है। भारत में 7 फीसदी लोग गैरकानूनी रूप से ड्रग्स लेते हैं।

देशभर में प्रतिदिन लाखों–करोड़ों की ड्रग्स पकड़ी जा रही है मगर बजाय थमने के यह कारोबार लगातार बढ़ता ही जा रहा है। सरकार की सख्ती के बावजूद नशे के तस्कर अपनी कारगुजारियों से बाज़ नहीं आ रहे है क्योंकि इस धंधे में उन्हें अंधी कमाई हो रही है। नशीले पदार्थों की बड़ी खेप पकड़े जाने से एक ओर जहां यह स्पष्ट होता है कि भारतीय एजेंसियां नशे के कारोबारियों के खिलाफ सजग और सक्रिय हैं, वहीं दूसरी ओर यह भी रेखांकित होता है कि ड्रग्स के सौदागर भारत को मादक पदार्थ खपाने का जरिया बना रहे हैं या फिर उसे यहां लाकर अन्यत्र भेजना आसान पा रहे हैं।

नशा समाज की रगों में प्रवेश कर चुका है, जिसके व्यापक नेटवर्क को आम लोगों के सहयोग से ध्वस्त किया जासकता है। नशा एक ऐसी बुराई है, जिसमे मानव का जीवन समय से पहले ही अंधकार और मौत की राह पर चला जाता है। नशाखोरी क्या है? एक खतरनाक बीमारी जिसके क्षणिक सुख के चलते इंसान अपनी जिंदगी से हाथ धो बैठता है। यह केवल एक बीमारी नहीं है बल्कि यह अनेक रोगों की जननी भी है।

नशा मनुष्य को अपराध की ओर ले जाता है जो शांतिपूर्ण समाज के लिए अभिशाप का जहर है। दुनिया की सबसे बड़ी युवा आबादी वाला देश भारत है। युवा नशे के मकड़जाल में फंसकर बर्बादी के कगार पर पहुंच रहे हैं। इससे उनकी सेहत तो खराब हो ही रही है साथ ही उनका सामाजिक स्तर भी गिरता जा रहा है। नशे का कारोबार बहुत तेजी से फैल रहा है, जिसमें देश–दुनिया के बड़े रैकेट शामिल हैं। एक अनुमान के मुताबिक हर साल गांजा, चरस, अफीम, ड्रग्स, ब्राउन शुगर, हेरोइन, डेंड्राइट से अरबों रुपये का कारोबार पर्दे के पीछे से ड्रग तस्कर करते हैं। मीडिया रिपोर्ट्स की मानें तो नशे का सामान चाय पान की थडियों, मेडिकल स्टोरों और शिक्षण संस्थाओं के आसपास आसानी से उपलब्ध हो जाता है। सुनसान रास्ते व खंडहर इमारतें नशा करने वाले बच्चों व युवाओं के विशेष अड्डे हैं।

नशाखोरी की आदत 12 से 20 साल तक के युवाओं में अधिक देखने को मिल रही है। इससे आने वाली पीढ़ी के भविष्य पर संकटों के बादल मंडराने लगे हैं। कभी चोरी छिपे बिकने वाले नशे का सामान आज धड़ल्ले से बिक रहा है। मनोचिकित्सकों का कहना है कि युवाओं में नशे के बढ़ते चलन के पीछे आधुनिकता की चकाचौंध भरी बदलती जीवन शैली, परिवार से विभिन्न प्रकार के दबाव, परिवारिक झगड़े, इन्टरनेट की अत्यधिक लत, एकाकी जीवन, परिवार से दूर रहने, पारिवारिक कलह जैसे अनेक कारण हो सकते हैं। नशा, नाश का मूल है। यह स्वास्थ्य और सामाजिक प्रतिष्ठा को क्षय करता है।

तमाम बंदिशों के बावजूद ड्रग्स का कारोबार फल–फूल रहा है और युवाओं के साथ ही अब वह स्कूदली छात्रों को भी निशाना बना रहा है। नशे का धंधा तेजी से बढ़ रहा है और वजह से ज्यादा से ज्यादा मुनाफा। अपने फायदे के लिए युवाओं को नशे की लत लगाई जा रही है। फिर चाहे नशा शराब का हो शबाब का हो या फिर नशीली ड्रग्स का। नशे के रूप में लोग शराब, गाँजा, जर्दा, ब्राउन.शुगर, कोकीन, स्मैक आदि मादक पदार्थों का प्रयोग करते हैं, जो स्वास्थ्य के साथ सामाजिक और आर्थिक दोनों लिहाज से ठीक नहीं हैं। नशे का आदी व्यक्ति समाज की दृष्टी से हेय हो जाता हैं, और उसकी सामाजिक क्रियाशीलता जीरो हो जाती हैं, फिर भी वह व्यसन को नहीं छोड़ता हैं।

धूम्रपान से फेफड़े में कैंसर होता हैं, वहीं कोकीन, चरस, अफीम लोगों में उत्तेजना बढ़ाने का काम करती हैं, जिससे समाज में अपराध और गैरकानूनी हरकतों को बढ़ावा मिलता हैं। इन नशीली वस्तुओं के उपयोग से व्यक्ति पागल और सुप्तावस्था में चला जाता हैं। तम्बाकू के सेवन से तपेदिक, निमोनिया, साँस की बीमारियों का सामना करना पड़ता हैं। इसके सेवन से जन और धन दोनों की हानि होती हैं।

–बाल मुकुन्द ओझा,
वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार

प्रदेशभर में हिंदी मीडियम के 260 सरकारी स्कूल बंद किये

> ■ **बीकानेर में भाजपा विधायक के घर के सामने गर्ल्स स्कूल मर्ज, यहां 300 छात्राएं पढ़ रही हैं**

बीकानेर, (निसं)। राज्य सरकार ने पिछले 10 दिनों में 450 सरकारी स्कूलों को बंद कर दिया है। माध्यमिक शिक्षा निदेशक आशीष मोदी ने देर रात प्रदेशभर में 260 सरकारी स्कूल बंद होने का आदेश निकाला। करीब 10 दिन पहले भी 190 स्कूलों को बंद किया गया था। बंद किए गए सभी स्कूल हिंदी मीडियम के हैं। वहीं बीकानेर में भाजपा विधायक के घर के सामने स्थित गर्ल्स स्कूल को भी बंद कर दिया गया है। इस स्कूल को कम छात्र संख्या बताते हुए बंद कर बॉयज स्कूल में मर्ज किया गया है, जबकि यहां करीब 300 छात्राएं पढ़ रही हैं।

बंद किए गए 260 स्कूलों में से 14 स्कूल सीनियर सेकेंडरी स्कूल हैं, जहां बच्चों का नामांकन कम है। इन स्कूलों को बंद कर पास के दूसरे स्कूल में मर्ज किया गया है। इनमें जयपुर, अजमेर, पाली, ब्यावर, बीकानेर, हनुमानगढ़, उदयपुर और जोधपुर के स्कूल शामिल है। 9 प्राइमरी और अपर प्राइमरी तक के ऐसे स्कूल बंद किए गए हैं, जो सीनियर सेकेंडरी स्कूल के भवन या उनके पास में संचालित हो रहे थे। इन स्कूलों को सीनियर सेकेंडरी स्कूल में मर्ज किया गया है। इनमें जालोर, अजमेर, बीकानेर, हनुमानगढ़, जोधपुर और डूंगरपुर के स्कूल शामिल है। जयपुर के 2 प्राइमरी स्कूलों को पास के सीनियर सेकेंडरी स्कूल में मर्ज किया गया है। इन प्राइमरी स्कूलों में बच्चों का नामांकन कम था।

प्रदेश के 200 प्राइमरी और अपर प्राइमरी स्कूल को जीरो छात्र संख्या के कारण बंद किया गया है। इन स्कूलों को पास के ही सेकेंडरी और सीनियर सेकेंडरी स्कूल में मर्ज किया गया है। इसमें अजमेर, कोटपूतली–बहरोड़, अलवर, खैरथल–तिजारा, बांसवाड़ा, बारां, बालोतरा, बाड़मेर, भरतपुर, डीग, भीलवाड़ा, बीकानेर, चित्तौड़गढ़, चूरू, दौसा, धौलपुर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, जयपुर, जैसलमेर, जालोर, झालावाड़, झुंझुनूं, जोधपुर, फलोदी, करौली, कोटा, डीडवाना–कुचामन, नागौर, पाली, प्रतापगढ़ , राजसमंद, सीकर, सिरोही, उदयपुर, सलूंबर के स्कूल बंद किए गए हैं। इसके अलावा प्रारंभिक शिक्षा के 35 ऐसे स्कूलों को भी बंद कर दिया गया है, जहां छात्रों की नामांकन संख्या कम है। इन स्कूलों को पास के सीनियर सेकेंडरी स्कूल में मर्ज किया गया है। इनमें अजमेर, ब्यावर, बारां, बाड़मेर, भीलवाड़ा, बीकानेर, चित्तौड़गढ़, चूरू, डीग, डीडवाना–कुचामन, डूंगरपुर, सवाई माधोपुर, जयपुर, जालोर, खैरथल–तिजारा, कोटा, राजसमंद, टोंक और उदयपुर के स्कूल शामिल है।

बीकानेर शहर में रहने वाले कोलायत के विधायक अंशुमान सिंह भाटी के घर के ठीक सामने स्थित सरकारी बालिका सीनियर सेकेंडरी स्कूल को भी बंद कर दिया गया है। इस स्कूल को कम छात्र संख्या बताते हुए बंद किया गया है, जबकि यहां करीब 300 छात्राएं पढ़ रही हैं। क्षेत्र के लोगों ने अब अंशुमान सिंह और उनके दादा पूर्व विधायक देवी सिंह भाटी के सामने इस मुद्दे को रखा है। इस स्कूल को अब इसी परिसर में चलने वाली बॉयज स्कूल में मर्ज किया गया है। सरकार ने पिछले दिनों मंत्रियों की एक कमेटी बनाकर अंग्रेजी माध्यम के महात्मा गांधी स्कूलों की समीक्षा शुरू की थी। इन मंत्रियों की कमेटी ने अब तक कोई सिफारिश नहीं की है। ऐसे में राज्यभर में एक भी अंग्रेजी मीडियम स्कूल बंद नहीं हुई है, जबकि हिंदी मीडियम के 450 स्कूल बंद हो गए हैं।

जम्मूतवी में कार्य के चलते 13 ट्रेनों के कुछ फेरे निरस्त किये

कोटा, (निसं)। जम्मूतवी स्टेशन पर पुनर्विकास कार्य के लिए जम्मूतवी यार्ड में दिनांक 15 जनवरी से 06 मार्च तक नान इंटरलाकिंग कार्य के कारण कोटा से एवं कोटा होकर संचालित होने वाली 13 गाड़ियों के कुछ फेरे निरस्त किए गए है। गाड़ी संख्या 22941 इंदौर–मार्टियर कैप्टन तुषार महाजन (उधमपुर) एक्सप्रेस 20, 27 जनवरी, 03, 10, 17, 24 फरवरी एवं 03 मार्च को निरस्त रहेगी।

गाड़ी संख्या 22942 मार्टियर कैप्टन तुषार महाजन (उधमपुर)–इंदौर एक्सप्रेस 22, 29 जनवरी, 05, 12, 19, 26 फरवरी एवं 05 मार्च को निरस्त रहेगी। गाड़ी संख्या 20985 कोटा–मार्टियर कैप्टन तुषार महाजन(उधमपुर) एक्सप्रेस 22, 29 जनवरी, 05, 12, 19, 26 फरवरी एवं 05 मार्च को निरस्त रहेगी। गाड़ी संख्या 20986 मार्टियर कैप्टन तुषार महाजन (उधमपुर)–कोटा एक्सप्रेस 23, 30 जनवरी, 06, 13, 20, 27 फरवरी एवं 06 मार्च को निरस्त रहेगी। गाड़ी संख्या 19803 कोटा–श्री माता वैष्णों देवी कटरा एक्सप्रेस 18, 25 जनवरी, 01, 08, 15, 22 फरवरी एवं 01 मार्च को निरस्त रहेगी। गाड़ी संख्या 19804 श्री माता वैष्णों देवी कटरा–कोटा एक्सप्रेस 19, 26 जनवरी, 02, 09, 16, 23 फरवरी एवं 02 मार्च को निरस्त रहेगी। गाड़ी संख्या 12471 बांद्रा टर्मिनल–श्री माता वैष्णों देवी कटरा स्वराज एक्सप्रेस 02 एवं 03 मार्च को निरस्त रहेगी। गाड़ी संख्या 12472 श्री माता वैष्णों देवी कटरा–बांद्रा टर्मिनल स्वराज एक्सप्रेस 04, 05 एवं 07 मार्च को निरस्त रहेगी। गाड़ी संख्या 12475 हापा–श्री माता वैष्णों देवी कटरा एक्सप्रेस 04 मार्च को निरस्त रहेगी।

गाड़ी संख्या 12476 श्री माता वैष्णों देवी कटरा–हापा एक्सप्रेस 03 मार्च को निरस्त रहेगी। गाड़ी संख्या 12477 जामनगर–श्री माता वैष्णों देवी कटरा एक्सप्रेस 05 मार्च निरस्त रहेगी। गाड़ी संख्या 12474 श्री माता वैष्णों देवी कटरा–गांधीधाम सर्वोदय एक्सप्रेस 06 मार्च को निरस्त रहेगी। गाड़ी संख्या 12473 गांधीधाम–श्री माता वैष्णों देवी कटरा सर्वोदय एक्सप्रेस 01 मार्च को निरस्त रहेगी। वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक सौरभ जैन ने बताया कि इस संबंध में सर्व–संबधित स्टेशनों और कर्मचारियों को निर्देशित किया गया है। यात्रियों से अनुरोध किया है कि असुविधा से बचने के लिए उक्त ट्रेन की उचित जानकारी स्टेशन, रेल मदद 139 अथवा ऑनलाइन प्राप्त कर यात्रा करें।

सड़क दुर्घटना मामले में 53.81 लाख रूपये का अवार्ड पारित

अक्टूबर 2020 के मामले में अवार्ड पारित

तारानगर, (निसं)। न्यायालय मोटर दुर्घटना दावाधिकरण के तारानगर पीठासीन अधिकारी संतोष कुमार मीणा ने सड़क दुर्घटना मामले में कुल 53.81 लाख रूपये का आवार्ड पारित किया।

पीड़ित पक्ष की तरफ से पैरवी कर रहे अधिवक्ता अनिल कुमार स्वामी राजपुरा ने बताया कि 19 अक्टूबर 2020 को गांव ढाणा पट्टा सात्युं निवासी संजय पुत्र ओमप्रकाश व मांगीलाल पुत्र गोपीराम मोटरसाइकिल से ढाणा भाकरान से तारानगर आ रहे थे तो ढाणा भाकरान अड्डा पास पहुंचे तो गांव के ही सुरेश पुत्र मनफुल, विक्रम पुत्र ओमप्रकाश सड़क की साइड में खड़े थे। इन दोनों को देखकर संजय व मांगीलाल भी अपनी मोटरसाइकिल को रोककर साइड में खड़े होकर चारों आपस में बात कर रहे थे।

इतने में ही तारानगर की तरफ से ट्रक का चालक लिखमाराम मेघवाल निवासी बाड़मेर ने ट्रक को तेज गति व लापरवाही से चलाकर साइड में खड़े चारों लड़कों के टक्कर मारी, जिससे चारों लड़के गम्भीर रूप से घायल हो गये। भालेरी की तरफ से आ रही बोलेरो गाड़ी में सवार व्यक्तियों ने चारों लड़कों को बोलेरो गाड़ी में डालकर सरकारी अस्पताल तारानगर लेकर आये, जहां डॉक्टरों ने सभी को मृत घोषित कर दिया।

उक्त दुर्घटना का मुकदमा तिलोकाराम पुत्र ओमप्रकाश जाट ने पुलिस थाना तारानगर में दर्ज करवाया। पुलिस ने अनुसंधान कर ट्रक चालक के खिलाफ न्यायालय में चालान पेश किया। सभी मृतकों की ओर से उनके माता–पिता की ओर से न्यायालय में क्लेम याचिका पेश की। पीठासीन अधिकारी संतोष कुमार मीणा ने पत्रावलियों का अवलोकन कर पत्रावली पर आई साक्ष्यों के आधार पर प्रार्थी मनफुल आदि के पक्ष में 13.47 लाख रूपये, प्रार्थीया गुड्डी आदि के पक्ष में 13.47 लाख रूपये, गोपीराम आदि 13.99 लाख रूपये, प्रार्थी ओमप्रकाश के पक्ष में 12.86 लाख रूपये का अवार्ड पारित कर अप्रार्थी बीमा कम्पनी को कुल राशि मय ब्याज 53.81 लाख रूपये अदा करने का आदेश प्रदान किया।

काजरी में लहलहाया "रेगिस्तानी सेब"

कम खर्च में शानदार मुनाफा वाली नकदी फसल है सेब

> ■ **काजरी द्वारा विकसित गोला किस्म के बेर को रेगिस्तान का सेब कहा जाता है, सेब का उत्पादन इस बार जोरदार हुआ है, क्योंकि पूरे पश्चिमी राजस्थान में अच्छी बारिश हुई थी**

जोधपुर, (कासं)। पश्चिमी राजस्थान में केंद्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान काजरी द्वारा कम पानी या भारी पानी में भी नकदी फसल लेने के लिए प्रोत्साहित की गई बेर की खेती लाभदायक साबित हो रही है। किसानों के खेतों अन्य फसलों की तरह ही काजरी में विकसित बेर की किस्मों की फसल भी लहलहा रही है। काजरी द्वारा विकसित गोला किस्म के बेर को रेगिस्तान का सेब कहा जाता है। सेब का उत्पादन इस बार जोरदार हुआ है, क्योंकि पूरे पश्चिमी राजस्थान में अच्छी बारिश हुई थी।

काजरी के वैज्ञानिक डॉ. धीरज सिंह बताते हैं कि हमारे यहां 40 से ज्यादा बेर की किस्मों का संग्रह किया गया है। नई किस्मों पर भी काम चल रहा है। गोला बेर का पेड़ 50 से 70 किलो फल एक सीजन में देता है। उन्होंने बताया कि पश्चिमी राजस्थान के किसान अपनी रोजमर्रा की खेती के साथ–साथ बेर का उत्पादन करने लगा है। खेत के अलग–अलग हिस्सों में बेर के पेड़ लगाए जा सकते हैं। 3 वर्ष के बाद पेड़ फल देना शुरू कर देते हैं। उन्होंने बताया कि किसान द्वारा सामान्य खेती की सिंचाई से ही बेर के पेड़ को पानी मिल जाता है। इसके अलावा एक बार पेड़ लगने के बाद बारिश के पानी से ही हर साल फल प्राप्त किया जा सकता है। इसके लिए अतिरिक्त खर्च नहीं करना पड़ता, बल्कि किसान हर वर्ष अतिरिक्त आमदनी ले सकता है।

बेर की फसलों पर सर्वाधिक शोध जोधपुर काजरी में हुआ है, जिससे देश के किसानों के लिए कई किस्में विकसित की गई हैं, जो कम पानी में पनपती हैं, जिसका फायदा किसानों को होता है। इन दिनों यहां पर कश्मीरी सेब नामक किस्म पर काम चल रहा है। काजरी अब तक 42 किस्म के बेर उत्पादित कर चुका है। बेर उत्पादन में सबसे पहले गोला बेर आता है। आगे धीरे–धीरे एप्पल, टिकडी, इलायची व थाई एप्पल का फल आएगा। गोला के अलावा प्रमुख रूप से पश्चिमी राजस्थान में सेब, कैथली, छुहारा, दंडन, उमरान, काठा, टिकडी, इलायची व थाई एप्पल जनवरी से मार्च तक बाजार में बिकते हैं।

काजरी के वैज्ञानिक बताते हैं कि बड़–छोटी जोत के किसान अपने खेत के चारों तरफ 20–30 पेड़ लगाकर हर साल 30 से 45 हजार रुपये की अतिरिक्त आय कर सकते हैं। छोटी जोत के किसान बेर का बगीचा लगा सकते हैं। दिसंबर से मार्च तक बेर की फसल आती है। पश्चिमी राजस्थान में एक हजार एकड़ से ज्यादा क्षेत्र में किसान अभी बेर की खेती करते हैं।

आरपीएससी में पदोन्नति समिति की बैठक हुई

अजमेर, (कासं)। राज. लोक सेवा आयोग में संस्कृत शिक्षा विभाग की पदोन्नति समिति की बैठक आयोजित की गई। आयोग सदस्य प्रो. अय्यूब खान की अध्यक्षता में हुई इस बैठक में विभिन्न पदों पर पदोन्नति के 992 प्रकरणों पर चर्चा की गई। बैठक में उपनिदेशक, संभागीय संस्कृत शिक्षाधिकारी, प्रधानाचार्य (वरिष्ठ उपाध्याय विद्यालय), प्रधानाध्यापक (प्रवेशिका विद्यालय), प्राध्यापक (विभिन्न विषय) और वरिष्ठ अध्यापक (विभिन्न विषय टीएसपी एवं नॉन टीएसपी) के पदों पर पदोन्नति के मामलों को शामिल किया गया। बैठक में शासन सचिव संस्कृत शिक्षा पूनम, महर्षि दयानंद सरस्वती वि.वि. की रजिस्ट्रार एवं कार्मिक विभाग की प्रतिनिधि प्रिया भार्गव, आयुक्त संस्कृत शिक्षा राज. प्रियंका जोधावत सहित अन्य अधिकारी मौजूद रहे।